GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES UGC APPROVED ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-7, June 2017 Impact Factor: 3.987

Paper ID: UGC 48846-813

प्राचीन भारतीय गणराज्यों की धार्मिक नीति

डा0 अभिनन्दन सिंह
कार्य वाहक प्राचार्य श्री हीरानन्द महाविद्यालय, बिवार हमीरपुर

सारांश प्राचीन भारत में राजतन्त्रों के साथ–साथ गणतन्त्रों का भी उदय हो चुका था उस समय भारत में कपिलवस्तु, रामग्राम, पावा एवं कु ीनारा, मिथिला, पिप्पलवन, भु ामारगिरि, अलकप्प, के ापुत्त, वै ाली आदि गणराज्य विद्यमान थे, इस भोध पत्र में इन गणराज्यों की धार्मिक नीति का अध्यन प्रस्तुत है–

शब्दकोश वैभव की पराकाष्ठा ,विशुद्ध जाति ,विद्यमान

प्रस्तावना

कपिलवस्तु के शाक्य

बुद्धकाल में वैभव की पराकाष्ठा पर पहुँचा यह राज्य पूर्व में रोहिणी और पश्चिम में राप्ती नदी से घिरा था। शाक्य कोशल जनपद के आधीन हिमालय की तराई में स्थित गणराज्य था। बुद्ध के स्वयं शाक्यवंशी होने के कारण बौद्ध साहित्य में शाक्यों का उल्लेख विशेष महत्व रखता है। कपिलवस्तु इस गणराज्य की राजधानी थी।[1] बौद्ध साहित्य के अनुसार विशुद्ध जाति का होने के कारण ही शाक्यकुल बोधिसत्व के लिए देवताओं द्वारा सर्वथा योग्य समझा गया। पुराणों के अनुसार ये इक्ष्वाकुवंशी थे। इन्हें उच्च जाति का क्षत्रिय तथा ब्राह्मणों का गौतम गोत्र धारण करने वाला बताया गया। महावस्तु[2] के अनुसार कपिल ऋषि के नाम पर उनके पुत्रों ने शाक्य राजधानी का नाम कपिलवस्तु रखा था।

तथागत के धर्म प्रचार के प्रारम्भिक वर्षों में उनका धर्म शाक्यों द्वारा समर्थित नहीं था।[3] लेकिन कालान्तर में शाक्यों ने बौद्ध धर्म को अपना समर्थन एवं सहयोग दिया। राजपुरोहित का पुत्र उदायी बौद्ध धर्म को ग्रहण करने तथा भिक्षु से अर्हत होने वाला पहला शाक्य था उदायी का अनुसरण कर अनेकों शाक्यों ने बुद्ध की शरण प्राप्त की। राजा शुद्धोधन के एक अन्य भ्राता अमितोदन का पुत्र आनन्द एक भिक्षु पुण्ण मंतानी पुत्र के द्वारा बुद्ध वचन सुनकर स्त्रोपन्न हो गया इसी तरह शाक्य कुल स जुड़े बहुत से व्यक्ति बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गए। इससे उनके बौद्ध धर्म के प्रति आस्था का पता चलता है। हमें यह पता चलता है कि शाक्य राज्य में खोमदुस्स नामक ब्राह्मणों की बस्ती थी।[4] इससे उनके ब्राह्मण धर्म के प्रति आस्था का पता चलता है। पिपरहवा से एक अस्थिकलश लेख मिला है। जिससे यह सिद्ध होता है कि शाक्यों ने बुद्ध की मृत्यु के पश्चात उनकी अस्थियों पर एक चैत्य का निर्माण करवाया था लेख का अनुवाद है।

सुकीर्ति (बुद्ध) के शाक्य बन्धुओं ने भाइयों, भगिनियों, पुत्रों एवं भार्याओं के साथ भगवान बुद्ध के ये अवशेष मंजूषा को समर्पित किए,श्रीराम गोयल ने इसका अर्थ इसप्रकार बताया है – भगवान बुद्ध के शरीर (अवशेष) का यह पात्र सुकीर्ति के भाइयों ने अपनी बहनों, पुत्रों, स्त्रियों एवं प्रियजनों सहित प्रतिष्ठापित किया।[5] इन सभी साक्ष्यों से सिद्ध होता है कि शाक्यों में धार्मिक सहिष्णता विद्यमान थी।

रामग्राम के कोलिय

दीर्घनिकाय के अनुसार कोलिय वंश की उत्पत्ति शाक्य कन्या तथा काशी के राजा राम के सम्बन्ध में हुई थी। इनकी राजधानी रामग्राम थी।[6] कनिंघम के अनुसार यह वर्तमान काल का देवकली स्थान है। महावंश[7] के अनुसार यह नगरी अचिरावली या राप्ती नदी के समीप थी। रोहिणी नदी इसे शाक्य जनपद से पृथक करती थी। दित्यावदान[8] के अनुसार कोलिय भी इस्वाकु वंशी क्षत्रिय थे परन्तु पितृपक्ष से कोलिय निश्चित ही नागवंशी थे क्योंकि उनका पूर्वपुरुष राम काशी का नागवंशी नरेश था। महापरिनिब्बानसुत्त से पता चलता है कि बुद्ध के अवशेषों पर निर्मित रामग्राम स्तूप की पूजा नाग करते थे। ये नाग निर्विवाद रूप से रामग्राम के नागवंशियों के परिचायक हैं। कोलिय जनपद में ब्राह्मण धर्म का ज्यादा प्रभाव था मझिम निकाय[9] में यह सूचना है कि कोलिय प्रदेश में बुद्ध ने हलिद्धवसान नगर में पुन्नगोवातिक और कुक्कुटवाटिक नामक दो धर्म जिज्ञासु व्यक्तियों को सदधर्म की दीक्षा दी थी। यह दोनों पहले ब्राह्मण धर्म के पोषक थे और शरीर पीड़न दर्शन में विश्वास रखते थे। इससे उनकी धार्मिक सहिष्णुता सिद्ध होती है। क्योंकि वह ब्राह्मण, बौद्ध, जैन सभी धर्मों का आदर करते थे।

Paper ID: UGC 48846-813

पावा एवं कुशीनारा के मल्ल

छठी शताब्दी ई0 पू0 में मल्ल उत्तरी भारत का एक शक्तिशाली गणराज्य था। इससे पूर्व काल में लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने इन क्षेत्रों पर राज्य किया था। यहाँ के निवासियों को मल्ल युद्ध में रूचि रखने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम मल्ल पड़ा। महाभारत[10] के भीष्म पर्व में मल्ल राष्ट्र का उल्लेख मिलता है इसकी राजधानी कुशावती थी, जिसके अन्य नाम कुशीनगर और कुशीग्राम थे। पहले जहाँ महासम्मत वंश के अधीन नृपतन्त्र था।[11]

मल्ल राज्य कपिलवस्तु से 12 योजन दूर तथा 2 भागों में विभाजित था एक क्षेत्र की राजधानी पावा और दूसरे की कुशीनारा थी। इन दोनों के मध्य ककुत्था नदी बहती थी। पावा की पहचान आधुनिक गोरखपुर जिला के पडरौना कस्बे और कुशीनारा का पश्चिमी देवरिया का कसया (कुशीनगर) कस्बा माना गया है। बुद्ध ने स्वयं मल्लों की दार्शनिक दृष्टि की प्रशंसा भी की थी ये विभिन्न धार्मिक विचारधाराओं के प्रति उदार भावना रखते थे इसी कारण जैन एवं बुद्ध दोनों ही धर्मों को प्रारम्भिक अवस्था में मल्ल जन निवासियों का समर्थन प्राप्त हुआ था।

डॉ0 लाहा की धारणा है कि जैन एवं बौद्ध धर्म के प्रचार से पूर्व मल्लों में चैत्य पूजा की लोकप्रियता थी।[12] बुद्ध ने इस जनपद के अनौमा नदी के किनारे बसे अनूपिय बाग में सात सप्ताह व्यतीत किये थे। सम्बोधि प्राप्ति के पश्चात मल्ल जनपद में धर्म प्रचारार्थ बुद्ध का अनेक बार आगमन हुआ था। बुद्ध के धर्म पचार के पूर्वार्द्ध में महावीर इन क्षेत्रों में जैन धर्म का प्रचार कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी महावीर के जीवन काल में मल्ल गणराज्य में जैन धर्म बौद्ध धर्म का प्रबल प्रति स्पर्धी बना रहा और बुद्ध को अपने सदधर्म के प्रसार में विशेष सफलता नहीं मिली। महावीर ने पावा में पंचत्व प्राप्त किया था।[13]

मल्लों ने महावीर के निर्वाण को बड़ी दीवाली के रूप में मनाया था। जिससे उन्होनें प्रजा में महान किन्तु बुझे हुए अग्नि स्कंध के प्रति अपनी भावना प्रकट की।[14] मल्लों ने बुद्ध एवं बौद्ध धर्म को भी भरपूर सहयोग दिया था। एक बार बुद्ध के कुशीनारा आगमन के समय मल्ल जन निवासियों ने यह निश्चय किया कि बुद्ध के स्वागत समारोह में अनुपस्थित होने वाला व्यक्ति पाँच सौ मुद्राओं से दण्डित किया जायेगा।[15]

महापरिनिब्बानसुत्त[16] से ज्ञात होता है जिसमें पावा के मल्लों ने यह कहा था कि बुद्ध के अवशेष हम भी चाहिए और प्राप्त किए कुशीनगर के मल्लों ने यह कहा था कि बुद्ध हमारे ग्राम क्षेत्र में निर्वाण को प्राप्त हुए हैं हम उनके शरीर के अवशेषों को किसी को नहीं देंगे परन्तु विवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर उन्हें बुद्ध के अवशेषों को आठ अंशों में बाँटना पड़ा था। हम देखते हैं महावीर एवं बुद्ध दोनों ही मल्लों के यहाँ निर्वाण प्राप्त करते हैं अतः यह उनकी धार्मिक सहिष्णुता का ही प्रतीक है। वह सब धर्मों का आदर करते थे। पावा के मल्ल राजवंश में जन्मे धन्दसुमन नामक राजकुमार में सद्धर्म से प्रभावित हो प्रव्रज्या ग्रहण की थी। ऐसे ही अनेक मल्ल थे जो जैन एवं बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्मानुयी थे।

मिथिला के विदेह

बिहार के भागलपुर तथा दरभंगा जिलों के भू–भाग में विदेह गणराज्य स्थित था। प्रारम्भ में यह राजतन्त्र था यहाँ के राजा जनक एवं ऋषि याज्ञवल्क्य के नेतृत्व में मिथिला वैदिक संस्कृति का बडा केन्द्र बन गया था।[17] जातकों के अनुसार मिथिलापुरी का विस्तार 7 योजन था। उसमें 16,000 ग्राम थे। और वहाँ 6,00000 कार्षापण नित्य प्रति दान में व्यय होता था। यह प्राचीन राजाओं की त्याग भावना एवं धार्मिक उदारता की भावना को दर्शाता है। यहाँ के राजा निमि संसार से विरक्त हो पंचेक बुद्ध के पद पर पहुंच गए।[18] राजा विदेह परिव्राजक हो गए महावीर की माता विदेह की ही थीं इस कारण जैन धर्म भी यहां प्रभावी था। ब्राह्मण धर्म के तो वे पोषक थे ही और बौद्धों को सम्मान देते थे। यह सब उनकी धार्मिक सहिष्णुता सिद्ध करता है।

पिप्पलिवन के मोरिय

मोरिय गणराज्य के लोग शाक्यों की ही एक शाखा थे। महावंश टीका[19] से पता चलता है कि कोशल नरेश विडूढभ के अत्याचारों से बचने के लिए वे हिमालय प्रदेश में भाग गए जहां मोरो की कूक से गुंजायमान स्थान में पिप्पलिवन नामक नगर बसा लिया। दीर्घनिकाय[20] से पता चलता है कि उन्होंने स्वयं क्षत्रिय होने के कारण भगवान बुद्ध के अवशेषों की मांग की थी '' भगवान भी क्षत्रिय थे हम भी क्षत्रिय हैं'' परन्तु जब तक मोरियों का दूत कुशीनगर पहुँचा तब तक ब्राह्मण द्रोण बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में बांट चुका था अतः मोरियों को चिता की अंगार ही मिल पाई जिस पर उन्होंने अंगार स्तूप का निर्माण करवाया। प्रायः यह भी धर्म सहिष्णु थे।

सुसमार गिरि के भग्ग

सुसमार गिरि का समीकरण मिर्जापुर जिले में स्थित चुनार से किया गया है ऐसा लगता है कि भग्ग ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित 'भर्ग' वंश से संबंधित है।[21] भग्ग लोग वत्सों की अधीनता स्वीकार करते थे। ज्ञात होता है कि सुसमार पर्वत पर वत्सराज उदयन का पुत्र बोधि निवास करता था। चुल्लवग्ग में

Paper ID: UGC 48846-813

वत्सराज उदयन के पुत्र कुमार बोधि का उल्लेख है। जिसने सुसमारगिरि में अपने नये बनवाये गये कोकनाद प्रसाद में बुद्ध का स्वागत किया था।[22] धर्म प्रचारार्थ बुद्ध सुसमागिरि स्वयं गये थे। भागों के उच्चकुल प्रतिनिधि अभय राजकुमार ने भी बुद्ध की उपासना कर उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म की श्रेष्ठता स्वीकार की। अतः यह भी धर्म सहिष्णुता शासक थे।

अलकप्प के बुलि

बुलियों का घनिष्ठ संबंध वेठ द्वीप के साथ था जहाँ ब्राह्मण द्रोण की जन्मभूमि थी। यह गणराज्य आधुनिक बिहार के शाहाबाद और मुजफ्फरपुर जिलों के बीच स्थित था। यह लोग भी सभी धर्मों का समान आदर करते थे जो उनकी सहिष्णुता को प्रदर्शित करता है। बुलियों ने बुद्ध के निर्वाण के बाद मल्लों से बुद्ध की धातु माँग कर स्तूप बनवाया था।[23]

केसपुत्त के कलाम

यह गणराज्य सम्भवतः कोशल के पश्चिम में स्थित था और सम्भवतः सुल्तानपुर जिले के कुड़वार से लेकर पालिया नामक स्थान तक फैला हुआ था। इस गणराज्य म वैदिक धर्म विद्यमान था लेकिन बाद में यह बौद्ध धर्म का केन्द्र बन गया। क्योंकि गौतम के गुरू मुनि आलार कालाम इसी संघ के थे। अगुन्तर निकाय[24] से ज्ञात होता है कि केसपुत्त में विभिन्न धर्मों के आचार्य अपने–अपने धर्म का प्रचार करते थे। ऐसा तभी सम्भव था जब कलाम सहिष्णु हो अतः यह उनकी सहिष्णुता को सिद्ध करता है।

वैशाली के लिच्छवि

यह बुद्ध काल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था। लिच्छवि वज्जिसंघ में सर्वप्रमुख स्थान रखते थे। इस संघ की राजधानी का नाम वैशाली था। वर्तमान समय का मुजफ्फरपुर जो बिहार में पड़ता है, वहाँ का वसाढ़ नामक स्थान प्राचीन वैशाली था। यहाँ का शासक चेटक था। वह महावीर स्वामी का अनन्य भक्त था। उसकी आठ रानियाँ भी जैन धर्म के प्रति श्रद्धावान थी।[25] चेटक के पिता का नाम केक और माता का नाम सुभद्रा था। चेटक की अग्रमहिषी का नाम सुभद्रा था उसकी भी जैन धर्म में बड़ी श्रद्धा था। एक बार मगध में राजगृह के निकट उनका शिविर पड़ा हुआ था। वहाँ भी चेटक ने जिन आयतन बनवाया यह उसकी जैन धर्म में अपार श्रद्धा व्यक्त करता है। चेटक के दस पुत्र थे। जिनमें सिंहभद्र बड़ा था। वह लिच्छवियों का प्रधान सेनापति था। और वह भी भगवान महावीर का अनन्य भक्त था।[26] क्योंकि महावीर के पिता ने इसी राज्य की कन्या से शादी की थी। जो महावीर की माता थी इसलिए जैन धर्म का यहाँ व्यापक प्रभाव रहा।

महावस्तु[27] में बुद्ध के प्रारम्भिक वैशाली आगमन का विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है। इस समय वैशालो में महामारी का प्रकोप हुआ था। लिच्छवियों ने इससे मुक्ति पाने के अनेक उपाय किए परन्तु कोई भी उपाय सफल न हुआ। अन्त में लिच्छवियों ने तथागत को अपने राज्य में बुलाने का निश्चय किया। इस समय बुद्ध राजगृह में निवास कर रहे थे उन्हें वैशाली आने का निमंत्रण देने के लिए तोमर नामक एक लिच्छवि अध्यक्ष अपने परिचरों के साथ राजगृह पहुँचा बुद्ध के चरणों में शीश नवाकर उसने उन्हें महामारी का समाचार सुनाया और लिच्छवि गणराज्य के कल्याण की कामना की मगध नरेश बिम्बसार को यह ज्ञात होने पर कि लिच्छवि अध्यक्ष बुद्ध को अपने गणराज्य ले जाना चाहता है उसने लिच्छवि अध्यक्ष से वार्ता की और यह शर्त रखी कि लिच्छवि बुद्ध को अपने राज्य में भव्य स्वागत के साथ ले जायेंगे। उन्होंने बुद्ध का भारी स्वागत करते हुए हाथियों और स्वर्णालंकृत रथों का जुलूस निकाला और गंगा से लेकर नगर तक के मार्ग को पताकाओं, पुष्पमालाओं और स्वर्णपट्टों से सजाया और गंधोदक से सिक्त करके बुद्ध के मार्ग में पुष्प बिछाए और सुगंधियाँ जलाई।[28]

महावग्ग[29] के अनुसार वैशाली में अनेक चैत्य और बिहार थे उनमें आठ चैत्य बड़े प्रसिद्ध थे। बुद्धघोष की व्याख्या के अनुसार ये यक्षपूजा क अथवा बुद्ध धर्म से पूर्वकाल के धर्म के पूजा स्थान थे लिच्छवियों ने इन सबका दान बुद्ध के लिए कर दिया अंगुत्तर[30] निकाय में वर्णन आता है कि 500 उद्दण्ड लिच्छवि युवकों को शान्ति से उपदेश सुनते देखकर महानाम लिच्छवि ने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया था। जिन प्रसिद्ध लिच्छवियों ने बौद्ध धर्म स्वीकृत किया उनम कुछ के नाम इस प्रकार हैं, भद्दिय, साल्ह, अभय, नन्दक, अज्जन वनिय, सीह, या सिंह सेनापति, आम्रपाली, महालि विमल कोडज्ज आदि।

वैशाली में आजीवक सम्प्रदाय का भी कुछ प्रभाव था। ब्राह्मणों के लिए भी यह नगरी आश्रय केन्द्र थी। वैशाली के दक्षिणी भाग को कुण्डपुर कहते थे यहाँ पर बहुत से ब्राह्मण निवास करते थे इसलिए इसका नाम ब्राह्मण कुण्डपुर था।

इन सम्पूर्ण साक्ष्यों का अध्ययन करने से यही प्रतीत होता है कि वैशाली गणराज्य में जैन, बौद्ध, आजीवक एवं ब्राह्मण सभी धर्मों के मानने वाले निवास करते थे राजशाही सबको आश्रय देती थी। जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है। इस प्रकार महाजनपदों एवं गणराज्यों में धार्मिक सहिष्णुता विद्यमान थी।

निष्कर्ष

महाजनपद काल में जब ब्राह्मण धर्म अपनी पकड़ बनाये हुए था उस समय बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म ने भी खूब प्रचार प्रसार करके अपने धर्मों की महाजनपदों एवं गणराज्यों में पहुंच बना ली उस समय के प्रसिद्ध राजा बिम्बसार, प्रसेनजित, उदयन प्रद्योत एवं अजातशत्रु आदि ये सभी धर्मों को मानने वाले थे। विनय पिटक

Paper ID: UGC 48846-813

से ज्ञात होता है कि बिम्बसार ने बुद्ध के मिलने के बाद बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। दीर्घनिकाय से पता चलता है कि बिम्बसार ने चम्पा के प्रसिद्ध ब्राह्मण सोनदण्ड को वहाँ की सम्पूर्ण आमदनी दान में दे दी थी। जैन ग्रन्थ उत्तराध्यायन सूत्र से पता चलता है कि बिम्बसार अपनी रानी एवं परिचारकों के साथ महावीर से मणिकुक्षि चैत्य मिलने गया था। ऐसे ही राजा प्रसेनजित ब्राह्मण धर्म का प्रबल समर्थक था। जब बुद्ध श्रावस्ती में ठहरे थे तो उसने एक हिंसात्मक यज्ञ का आयोजन किया था। संयुक्त निकाय से प्रसेनजित का बौद्ध होना सिद्ध होता है। वह महावीर स्वामी का भी भक्त था।

उदयन भी ब्राह्मण धर्म का प्रबल समर्थक था और पहले वह बुद्ध से मतलब नहीं रखता था। धम्मपद अट्टकथा से पता चलता है कि बाद में वह बुद्ध का उपासक हो गया। इसी प्रकार राजा प्रद्योत भी ब्राह्मण, जैन एवं बौद्ध धर्मों को मानता था, इसी तरह अन्य जनपदों में भी पूर्ण सहिष्णुता विद्यमान थी ऐसा मेरा निष्कर्ष है।

गणराज्यों में लिच्छवि, मल्ल, शाक्य आदि भी धार्मिक रूप से सहिष्णु थे। लिच्छवियों का प्रमुख चेटक महावीर स्वामी का अनन्य भक्त था महावस्तु से लिच्छवियों का बुद्ध के प्रति श्रद्धावान होना प्रदर्शित है। अतः लिच्छवि ब्राह्मण, जैन एवं बौद्ध सबको मानते थे। कुशीनारा एवं पावा के मल्ल गणराज्यों में ही महावीर एवं बुद्ध का परिनिर्वाण हुआ था। यह गणराज्य पूर्ण रूप से सहिष्णु थे भगवान महावीर एवं बुद्ध दोनों अपने धर्म का प्रचार करने मल्लों के यहाँ जाते थे। इसी तरह अन्य गणराज्यों शाक्य, मोरिय, भग्ग आदि में पूर्ण सहिष्णुता विद्यमान थी।

मेरा ऐसा मानना है कि महाजनपद एवं गणराज्यों के काल में जब धर्म एवं कर्म कठोर हुआ करता था तब भी हमारे भारतीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता का पूर्ण वातावरण बना रहा किसी भी धर्म ने अपने प्रचार–प्रसार में असिहष्णुता को हावी नहीं होने दिया जबकि उस समय ऐसा हो सकता था। क्योंकि उस समय राष्ट्रीय चेतना का अभाव था उस समय के समस्त साक्ष्यों जैसे बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य एवं ब्राह्मण साहित्य का अध्ययन करने पर मेरा यही मानना है कि उस समय महाजदों एवं गणराज्यों में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन सभी धर्मों का समान आदर किया जाता था जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है।

सन्दर्भ – ग्रन्थ

1. सुत्तनिपात, 3/1/18
2. महावस्तु, 9/350/17।
3. डी0 डी0 कौशाम्बी, पूर्वोक्त, पृ0 93।
4. राधा कुमुद मुखर्जी, पूर्वोक्त, 199।
5. नीहारिका, प्राचीन भारतीय पुरातत्व अभिलेख एवं मुद्राएं, पृ0 167।
पिपरहवा बौद्ध अस्थि कलश लेख; ''सुकीर्ति भतिनं सभागिनिकनंसुपुत्रः दलनं इय सलिल निधने बुधस भगवते सकि (यनं) यानं'',
6. आर0 के0 मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ0 201।
7. महावंश, पृ0 119।
8. दिव्यावदान, 102/04।
9. मज्झिम निकाय, 1/87।
10. महाभारत, 6/9/34।
11. कृष्णदत्त बाजपेयी एवं नलिनाक्ष दत्त, उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, पृ0 257।
12. बी0 सी0 लाहा, सम क्षत्रिय ट्राइब्स इन एंशियन्ट इण्डिया, पृ0 153।
13. कल्पसूत्र, एस0 बी0 ई0, 22/66।
14. आर0 के0 मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ0 203।
15. के0 डी0 बाजपेयी, एन0 दत्त, पूर्वोक्त, पृ0 254।
''यो भगवतो पच्चुग्गमनं न करिस्सति पच्चानलं दण्डोऽति,
16. महापरिनिब्बान सुत्त।
17. आर0 के0 मुखर्जी, वही।
18. कावेल जातक, 3/230।
19. महावंश टीका, पृ0 119।
20. दीर्घ निकाय, महापरिनिर्वाण सूत्र, 2/169।
21. आर0 सी0 मजूमदार, पूर्वोक्त, पृ0 17।
22. श्रीराम गोयल, प्राचीन भारत का इतिहास (320 ई0 तक), पृ0 136।
23. महापरिनिर्वाण सूत्र, 2/169,।
24. अंगुत्तर निकाय, 1/28।
25. जयशंकर मिश्रा, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 674।
26. ज्योति प्रसाद जैन, पूर्वोक्त, पृ0 9–10।
27. महावस्तु, 1/253।
28. आर0 के0 मुखर्जी, पूर्वोक्त, पृ0 205।
29. महावस्तु महानरिनिब्बान सुतंत और पाटिकसुतंत, 3/14,
30. अंगुत्तर निकाय, 3/75–8।